

कोटा में मौजी बाबा गुफा, चंबल गार्डन स्थित 'गोस्वामी हॉस्टल में हॉल
के उद्घाटन' के दौरान माननीय अध्यक्ष का भाषण

श्री जानकीलाल गोस्वामी जी ;
श्री संदीप शर्मा जी ;
सनातन पुरी जी महाराज शिवपुरी;
प्रिय छात्रो;
देवियो और सज्जनो ;

आज आप सबके बीच यहाँ उपस्थित होकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। इस भव्य हॉल के निर्माण के लिए दशनाम गोस्वामी समाज ने अथक प्रयास किए हैं। इसके लिए मैं उनकी सराहना करता हूँ। मैं उन सभी लोगों को भी साधुवाद देता हूँ जिन्होंने समाज सेवा हेतु इस कार्य में भरपूर सहयोग दिया।

सभी जानते हैं कि शिक्षण का स्तर बढ़ाने में अच्छी अवसंरचना का बहुत महत्व होता है। हॉस्टल में इस हॉल के निर्माण से युवा, ऊर्जावान और आकांक्षी छात्र लाभान्वित होंगे और उन्हें अपने लक्ष्य और सपनों को पूरा करने में सहायता मिलेगी।

यह हॉल न केवल भौतिक स्थान उपलब्ध कराएगा अपितु एक ऐसा जीवंत केंद्र बनेगा जहां छात्रों को सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक स्तर पर मेलजोल करने और परस्पर सहयोग करने का अवसर मिलेगा। इस

प्रकार यह हॉल युवा मानस को दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

यह स्थान अलग-अलग पृष्ठभूमि से आए छात्रों के बीच सौहार्द बढ़ाने, मैत्रीपूर्ण संबंध बनाने में सहायक होगा और वे यहाँ अपने जीवन के बहुमूल्य अनुभव एक-दूसरे के साथ साझा कर पाएंगे।

आपको पता होगा कि संस्कृत शब्द 'गो' का अर्थ पांच इंद्रियां, प्रकाश की किरण, गाय हो सकता है।

अतः, संदर्भ के आधार पर, गोस्वामी का अर्थ पांच इंद्रियों का स्वामी (पंचेंद्रिय), प्रकाश की किरण, या गाय का स्वामी हो सकता है। कुछ शिक्षाविदों का मानना है कि इस पंथ का उद्भव आदिगुरु शंकराचार्य के काल में हुआ था।

दूसरे विद्वानों का दावा है कि यह पंथ आदिकाल से भगवान शंकर की सेवा में रहा है। अतः दशनाम गोस्वामी पंथ की हिंदू धर्म के सिद्धांतों के प्रचार और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

गोस्वामी समाज ने भारत के सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। धार्मिक परंपराओं और ज्ञान के संरक्षक के रूप में, गोस्वामी समाज के लोगों ने आध्यात्मिक शिक्षाओं के संरक्षण और प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समाज की विद्वतापूर्ण शिक्षा और प्राचीन ग्रंथों की व्याख्याओं ने हिंदू दर्शन की समझ को और समृद्ध किया है।

आध्यात्मिक क्षेत्र के अलावा, गोस्वामी समाज विभिन्न सामाजिक कल्याणकारी कार्यों, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और सामुदायिक विकास को

बढ़ावा देने में भी सहायक रहा है। समाज सेवा के प्रति उनके समर्पण ने समाज के वंचित वर्गों के उत्थान में सहायता की है और उनके अनुयायियों के बीच एकता की भावना को बढ़ावा दिया है।

हमारे देश की सबसे बड़ी संपत्ति उसकी मानव संसाधन पूंजी है। हमारे देश की लगभग 65 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है। भारत को वैश्विक आर्थिक महाशक्ति बनाने के लिए हमें अपनी मानव संसाधन क्षमता का इष्टतम उपयोग करना होगा। ऐसा करने के लिए, समाज के सभी वर्गों के लिए शिक्षा सुलभ बनानी होगी ताकि उसके लाभ भी सभी को समान रूप से मिल सकें।

इस अवसर पर मुझे संस्कृत की एक पुरानी कहावत याद आ रही है: 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात् 'सच्ची शिक्षा मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है।'

मेरा यह पूर्ण विश्वास है कि समावेशी और सतत विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हमारी क्षमता का विकास और हमारा सशक्तीकरण करने, हमें ज्ञान की प्राप्ति कराने तथा हमारी रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए शिक्षा अत्यंत आवश्यक है।

वैदिक काल से ही हमारी पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में व्यक्ति के आंतरिक और बाहरी व्यक्तित्व निर्माण पर ध्यान देते हुए उसके समग्र विकास पर बल दिया गया है। उस समय शिक्षा घर, मंदिरों, पाठशालाओं, टोलों, चतुस्पदियों और गुरुकुलों में दी जाती थी। इसके अलावा, शिक्षा निशुल्क और विकेन्द्रीकृत थी। यह शिक्षा प्रणाली भारत की समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं के साथ-साथ विकसित हुई थी, जो मनुष्य के शारीरिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक और सौंदर्यपरक पहलुओं के समग्र विकास

में सहायता करती थी। परिणामस्वरूप प्राचीन काल में, भारत पूरे विश्व में शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केंद्र माना जाता था।

नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला और वल्लभी जैसे विश्वविद्यालय हमारे देश की शिक्षा प्रणाली की पहचान थे। इस शिक्षा प्रणाली ने हमें पाणिनी, आर्यभट्ट, चरक और कौटिल्य जैसे विद्वान दिए, जिन्होंने भारतीय सभ्यता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

शिक्षा के क्षेत्र में हमारे प्राचीन गौरव को फिर से प्राप्त करने और अपनी युवा जनसंख्या का समुचित लाभ उठाने के लिए भारत सरकार ने 2020 में नई शिक्षा नीति लागू की। नई शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य देश में शिक्षा प्रणाली में आमूल - चूल बदलाव लाना है। इसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का प्रचार-प्रसार और समानता को बढ़ावा देना है। यह शिक्षा व्यावसायिक प्रशिक्षण के साथ-साथ तकनीकी कौशल प्रदान करने पर भी बल देती है।

प्रिय छात्रो, हमारा देश दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। आप, युवा, भावी पीढ़ी के रूप में भारत को अपनी मंजिल तक ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। आप कहीं भी हों और कुछ भी काम कर रहे हों, आपको हर काम कड़ी मेहनत और पूरी ईमानदारी के साथ करना चाहिए।

यदि आप निःस्वार्थ भाव से देश के हितों को ध्यान में रखते हुए कार्य करते हैं तो निश्चित ही आप देश के लिए एक बहुमूल्य निधि साबित होंगे। आपके द्वारा उठाए गए हर कदम से हमारे देश और यहाँ के लोगों को लाभ मिलना चाहिए।

हमारा मानना है कि केवल 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' की विचारधारा को अपनाकर ही एक 'नए भारत' का निर्माण किया जा सकता है। इसलिए, हम सभी को मिलकर एक ऐसा परिवेश तैयार करना चाहिए जहाँ हर किसी को प्रगति के समान अवसर मिलें।

हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी के 'अमृत काल' के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जन आंदोलन और जन भागीदारी की भावना आवश्यक है। मुझे पूरा विश्वास है कि कोटा के युवा इस प्रयास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे और दूसरों के लिए अनुकरणीय उदाहरण पेश करेंगे।

इन्हीं शब्दों के साथ, मैं एक बार फिर इस नवनिर्मित हॉल को समाज को समर्पित करने के लिए गोस्वामी समाज को बधाई देता हूँ।

मुझे पूरा विश्वास है कि आने वाले समय में यह हॉल अनेक समारोहों, कार्यक्रमों और अकादमिक चर्चाओं के लिए एक मंच के रूप में काम करेगा और समग्र शिक्षा में भी योगदान देगा।

संक्षेप में, यह हॉस्टल के केंद्र के रूप में काम करेगा, जहां छात्र एक साथ नई-नई चीजें सीखेंगे और यहाँ से ऐसी यादें लेकर जाएँगे जो जीवन भर उनके साथ रहेंगी।

मैं दशनाम गोस्वामी समाज और यहां उपस्थित सभी लोगों को अपनी शुभकामनाएं देता हूँ। मैं आपके कल्याण और सफलता के लिए प्रार्थना करता हूँ।
